L-5 वृक्षाः (पेड़) Skt - VI

(1) वने वने निवसन्तो वृक्षाः ।
वनं वनं रचयन्ति वृक्षाः ।।

प्रसंग → प्रस्तुत श्लोक हमारी संस्कृत की पाठ्य-पुस्तक 'रुचिरा' भाग-1 के पाठ-5 'वृक्षाः' से लिया गया है। इसके माध्यम से कवि ने वृक्षों के महत्व के बारे में बताया है।

सरलार्थ → प्रत्येक वन (जंगल) में पेड़ रहते हैं।
प्रत्येक पेड़ वन की रचना करते हैं।

(2) पिबन्ति पवनं जलं सन्ततम् ।
साधुजना इव सर्वे वृक्षाः ।।

सरलार्थ → सभी पेड़ सज्जन लोगों की तरह हैं।
वे लगातार हवा और पानी को ग्रहण करते हैं।

(3) शाखादोलासीना विहगाः ।
तैः किमपि कूजन्ति वृक्षाः ।।

सरलार्थ → पक्षी टहनी रूपी झूलों पर बैठे हैं।
और पेड़ें ~~उनके~~ द्वारा कुछ भी कूकते हैं।

29/04/2020

गृहकार्य → नोटबुक में लिखें

VI A